B.A. Part-I Hons session 2019-20
Girija uranw Depatt of Psy Paper IInd
R.M.C. Sasaram

सिद्धांत की समीक्षा या मूल्यांकन — फ्रायड के स्वप्न सिद्धांत की काफी आलोचना हुयी। सबसे अधिक आलोचना मैथिक इच्छाओं की पूर्ति वाली बात को लेकर हुयी। सिद्धांत में जोर दिया गया है कि Dream is the disguised fulfilment of the repressed sexual desires and wishes. आलोचकों ने कहा कि यदि ऐसी बात है तो हम दुःखद स्वप्न, चिन्ता स्वप्न एवं दण्ड स्वप्न को देखते हैं।

Scanned with CamScanner

इससे किस तरह की इच्छा की पूर्ति होती है। इसी तरह तीव्र आघात या मानसिक आघात लगने पर व्यक्ति वैसा ही स्वप्न क्यों देखता है। इससे भी उसकी किस इच्छा की पूर्ति होती है। तीसरी मुख्य बात है कि बचपन के दुःखद अनुभव भी प्रायः स्वप्न में अभिव्यक्त होते हैं। इससे किस इच्छा की पूर्ति होती है। दुःखद अनुभव एवं इच्छापूर्ति ये दोनों विरोधी बातें हैं।

फ्रायड ने इन आपत्तियों की व्याख्या करते हुये कहा है कि स्वप्न से भी अचेतन इच्छाओं की पूर्ति होती है। इससे सुपर ईगो की इच्छाओं की पूर्ति होती है। सुपर ईगो का काम है दण्ड देना एवं आलोचना करना। फिर भी उन्होंने अपने सिद्धांत की सभी आपत्तियों पर सावधानीपूर्वक गौर किया एवं स्वप्न के अपने मौलिक सिद्धांत को 1933 में परिमार्जित किया। उन्होंने अपने परिमार्जित सिद्धांत का नामकरण इच्छापूर्ति के बदले "इच्छापूर्ति का प्रयास" (Attempted wishfulfilment theory of dream) रखा। उन्होंने प्रयास शब्द जोड़ दिया। इसका मतलब यह निकाला गया कि स्वप्न से इच्छा की पूर्ति नहीं होती है बल्कि इच्छा की पूर्ति का प्रयास रहता है। इस प्रकार अपने नये सिद्धांत में उन्होंने कुछ बातों को जोड़कर एवं कुछ को छोड़कर संशोधन कर दिया। लेकिन उनके परिमार्जित सिद्धांत की भी कई आलोचनायें की जाती है —

(i) नये सिद्धांत की अधिक आलोचना काम संबंधि इच्छाओं को लेकर की गई। कहा गया कि

Scanned with CamScanner

सभी स्वप्न से काम संबंधि इच्छा की ही पूर्ति नहीं होती। व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन की अन्य इच्छाएं भी स्वप्नों में व्यक्त हो सकती है।

(ii) इसकी आलोचना प्रतिकों को लेकर भी की जाती है। फ्रायड ने प्रतिकों को विश्वजनीन माना है जबकि अन्य का मानना है कि ये विश्वजनीन नहीं होते हैं अर्थात एक ही प्रतिक का अर्थ सबों के लिये एक नहीं होता है। ये व्यक्तिगत होते हैं।

(iii) फ्रायड के अनुसार स्वप्न का संबंध गत अनुभवों से रहता है पर युंग एडलर आदि ने बताया कि कुछ स्वप्नों का संबंध वर्तमान एवं भविष्य से भी रहता है।

उपरोक्त आलोचनाओं को ध्यान में रखते हुए कह सकते हैं कि इनकी व्याख्या के आधार पर सभी स्वप्नों की व्याख्या नहीं हो सकती है लेकिन स्वप्न संबंधि उनका विचार पूर्णतः गलत नहीं है बल्कि सीमित तथा एकांगी है। उन्होंने स्वप्न के संबंध में अचेतन मन में दमित इच्छाओं की संतुष्टि का प्रयास, स्वप्न विश्लेषण, स्वप्न रचना, प्रतिकीकरण आदि मौलिक तथ्यों की खोज की और स्वप्न की दुनिया पर नया प्रकाश डाला।

Scanned with CamScanner